

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चचत्वारिंशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে পঞ্চচৎরারিংশং দশকম্ ॥

কৃষ্ণস্য বালক্রীডারর্ণনম্

অযি সবল মুরারে পাণিজানুপ্রচারৈঃ

কিমপি ভরনভাগান্ ভুষযন্তৌ ভরন্তৌ।

চলিতচরণকঞ্জৌ মঞ্জুমঞ্জীরশিঞ্জা -

শ্ররণকুতুকভাজৌ চেরতুশচারুরেগাৎ ॥ 45.1 ॥

মৃদু মৃদু রিহসন্তাবুন্মিষদন্তরন্তৌ

রদনপতিতকেশৌ দৃশ্যপাদাজ্জদেশৌ।

ভুজগলিতকরান্তর্যালগৎ কঙ্কণাক্ষৌ

মতিমহরতমুচ্চৈঃ পশ্যতাং রিশ্রনূণাম্ ॥ 45.2 ॥

অনুসরতি জনৌঘে কৌতুকর্যাকুলাক্ষে

কিমপি কৃতনিদাদং র্যাহসন্তৌ দ্ররন্তৌ।

রলিতরদনপদ্মং পৃষ্ঠতো দত্তদৃষ্টী

কিমির ন রিদধাথে কৌতুকং রাসুদের ॥ 45.3 ॥

দ্রুতগতিষু পতন্তাবুখিতৌ লিপ্তপঙ্কৌ

দিরি মুনিভিরপঙ্কৈঃ সস্মিতং রন্দ্যমানৌ।

দ্রুতমথ জননীভ্যাং সানুকম্পং গৃহীতৌ

মুহুরপি পরিরঙ্কৌ দ্রাগ্যরাং চুষ্ণিতৌ চ ॥ 45.4 ॥

স্মুতকুচভরমঙ্কৈ ধারযন্তী ভরন্তং

তরলমতি যশোদা স্তন্যদা ধন্যধন্যা।

कपटपशुप मध्ये मुक्कहासाक्कुरं ते  
दशनमुकुलहृद्यं रीम्क्य रत्न्रं जहर्ष ॥ 45.5 ॥

तदनु चरणचारी दारकैस्साकमारा -  
निलयततिषु खेलन् बालचापल्यशाली।  
भरनशुकरिलालान् रंसकांश्चानुधारन्  
कथमपि कृतहासैर्गोपकैर्रारितोहडूः ॥ 45.6 ॥

हलधरसहितस्त्रुं यत्र यत्रोपयातो  
रिरशपतितनेत्रास्तत्र तत्रैर गोप्यः।  
रिगलितगृहकृत्या रिस्मृतापत्यडृत्या  
मुरहर मुहरतयन्ताकुला नित्यमासन् ॥ 45.7 ॥

प्रतिनरनरनीतं गोपिकादत्तमिच्छन्  
कलपदमुपगायन् कोमलं क्लापि नृत्यन्।  
सदययुरतिलोकैरर्पितं सर्पिरश्वन्  
क्लचन नररिपक्कं दुक्कमप्यापिवस्त्रुम् ॥ 45.8 ॥

मम खलु बलिगेहे याचनं जातमास्ता -  
मिह पुनरवलानामग्रतो नैर कुर्रे।  
इति रिहितमतिः किं देर सन्त्यज्य याच्छ्रां  
दधिघृतमहरस्त्रुं चारुणा चोरणेन ॥ 45.9 ॥

तर दधिघृतमोषे घोषयोषाजनाना -  
मभजत हृदि रोषो नारकाशं न शोकः।  
हृदयमपि मुषिंरा हर्षसिक्को न्यधास्त्रुं  
स मम शमय रोगान् रातगेहाधिनाथ ॥ 45.10 ॥

शाखाग्रेहथ रिधुं रिलोक्य फलमित्यथां च तातं मुहः  
सम्प्रार्थ्याथ तदा तदीय रचसा प्रोत्क्षिप्त बाहौ वरधि।  
चित्रं देव शशी स ते करमगां किं ब्रूमहे सम्पत -  
ज्ज्यातिर्मण्डलपुरिताखिलरपुः प्रागा रिराद्रूपताम् ॥ 45.11 ॥

किं किं वतेदमिति सद्भ्रम भाजमेनं  
ब्रह्मार्णवे क्षणममुं परिमज्ज्य तातम्।  
मायां पुनस्तनयमोहमयीं रितन्त्र -  
न्नानन्दचिन्मय जगन्मय पाहि रोगां ॥ 45.12 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चचत्वारिंशत् दशकं समाप्तम् ॥